:: भूमिका ::

आधुनिक युग में उपन्यासों की उपादेयता और लोकप्रियता अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा अधिक है। इसलिये इनका प्रणयन भी प्रचुर मात्रा में हो रहा है। आज उपन्यास मानव जीवन का चित्र नहीं किन्तु सप्राण प्रतिबिम्ब है। दिन प्रतिदिन नये नये साहित्यकार औपन्यासिक जगत में अवतरित हो मानवीय - अनुभूति को साहित्य में अभिव्यक्त करने की चेष्टा करते आये हैं। इनमें से कुछ कृतिकारों का साहित्य ही वीणापाणिनी के कोष की स्थायी और शाश्वत निधि बन पाया है। उपन्यासकार शेवडे जी इनमें से एक थे। शिवाजी विश्वविद्यालय की ओर से बी.ए.भाग— तीन के लिए विशेष लेखक का अध्ययन पेपर के लिए अनन्त गोपाल शेवडे जी को निर्धारित किया गया था। इस संदर्भ में गततीन सालों से बी.ए.भाग तीन की कक्षा में शेवडे जी के 'मंगला' और 'निशागीत' उपन्यासों को पढाता आ रहा हूँ। इन उपन्यासों में वर्णित समस्याएँ, आदर्श प्रेम की नयी व्याख्या, त्याग और सेवा का आदर्श, कलाकार की व्यथा वेदनाओं को दिया हुआ स्वर, हृदय परिवर्तन की बातें, आदर्श भारतीय नारी का रुप, महान उद्देश्य तथा प्रवाही भाषाशैली आदि बातों का मेरे मन पर गहरा असर हुआ। परिणाम स्वरुप मैं ने उनके अन्य उपन्यासों का अध्ययन किया। इन उपन्यासों में प्रतिबिंबित गांधीवादी दर्शन, राष्ट्रप्रेम की भावना, विश्वबंधुत्व, महामानव की कल्पना, भारतीय संस्कृति के प्रति आस्थाभाव, नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण, पाप-पुण्य की नयी व्याख्या तथा शेवडे जी के चिंतन प्रवाह से मैं प्रभावित हो गया।

अनुसंधान को प्रारंभ करने के पूर्व उनके संदर्भ में प्रकाशित सामग्री को ढूंढने का प्रयास किया। पर बडी खेद की बात है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में इतने महान उपन्यासकार का कहीं भी नामोल्लेख नहीं है। ऐसा लगता है कि

स्व. अनन्त गोपाल शेवडे जी साहित्यकार के रुप में उपेक्षित से रह गये है। इसलिये प्रबंध प्रणयन में सर्व प्रथम जो कठिनाई मेरे सम्मुख आई वह सामग्री विषयक थी। अबतक शेवडे जी के संदर्भ में बाँकेबिहारी भटनागर व्दारा सम्पादित 'शेवडे : व्यक्तित्व, विचार और कृति', डॉ.शं.ना.गुंजीकर जी का शोध ग्रंथ 'अनन्त गोपाल शेवडे और उनका साहित्य' तथा डॉ.सुनीलकुमार लवटे जी का 'शेवडे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' ये तीन ग्रंथ ही प्रकाशित हो चुके हैं। इन संदर्भ ग्रंथों का अध्ययन करने पर यह महसूस हुआ कि इनमें शेवडे जी ने उपन्यासकार, कथाकार, निबंधकार तथा हिन्दी का प्रचारक के रुप में हिन्दी की जो सेवा की उसीका परिचय मिलता है। इसमें हिन्दी उपन्यास परम्परा में शेवडे जी का अविर्भाव कब और कैसे हुआ ? उस समय की राजनीतिक, सामाजिक स्थिति कैसी थी ? उनके उपन्यासों का स्वरुपगत तथा शिल्पगत विकास कैसे हुआ ? रचनाकाल की दृष्टि से उनके उपन्यास कैसे विकसित हुये ? आदि बातें छूट गयी हैं। इन सारी त्रुटियों को दूर करने का प्रयास 'शेवडे के उपन्यासों का विकासात्मक अध्ययन' शीर्षक लघु-शोध प्रबंध में किया गया है।

प्रथम अध्याय में हिन्दी उपन्यास के उद्भव और विकास की चर्चा की गई है। विषय की पृष्ठभूमि स्पष्ट होने के लिए यह चर्चा आवश्यक थी। नये शोध कार्य के आधार पर हिन्दी का प्रथम मौलिक उपन्यास कौन सा है ? हिन्दी उपन्यास परम्परा का विकास कैसे हुआ और इस परम्परा में शेवडे जी का अविर्भाव कब हुआ ? जैसे प्रश्नों की चर्चा की है। हिन्दी का प्रथम उपन्यास 'परीक्षा गुरु' न होकर सन १८७० ई.में प्रकाशित 'देवरानी जेठानी की कहानी' है। - जैसे महत्वपूर्ण तथ्यों का प्रयोग इस संदर्भ में दृष्टव्य है।

व्दितीय अध्याय में शेवडे जी के उपन्यासों को रचनाकाल की दृष्टिसे स्वातंत्र्यपूर्व काल, स्वातंत्र्योत्तर काल और साठोत्तरी काल तथा में विभाजित कर तत्कालिन परिस्थितियों में वर्ण्य विषय और शिल्प की दृष्टिसे उनके क्रमिक

विकास की विवेचना की गई है। इस विवेचना के आधारपर यह देखा गया है कि शेवडे जी की स्वातंत्र्यपूर्व काल की एक मात्र औपन्यासिक रचना 'ईसाईबाला' (१९३२) में उनके दृष्टिकोण, मूल-उद्देश्य एवं मौलिक विचारों का जो बीज दिखाई देता है, साठोत्तरी उपन्यासों में उसका वटवृक्ष बना नजर आता है।

तृतीय अध्याय में शेवडे जी के उपन्यासों का स्वरूपगत विकास की दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है। स्वरूप की दृष्टिसे उनके उपन्यासों को सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, साहित्यिक और दार्शनिक दृष्टि से विभाजित किया है। आगे हिन्दी उपन्यासों का स्वरूप एवं विकास तथा प्रवृत्तियों का उल्लेख करते हुये, उसके परिप्रेक्ष्य में शेवडे जी के उपन्यासों का मूल्यांकन कर उनका विकास देखा गया है। स्थान - स्थानपर इन उपन्यासों में वर्णित समस्याओंका विवेचन भी किया गया है। शेवडे जी आरंभ में किस स्वरूप के उपन्यास लिखते थे और अन्त में वह स्वरूप बदलकर कैसा हुआ ? जैसे तथ्यों की विस्तृत विवेचना करना इस अध्याय का लक्ष्य रहा है।

चतुर्थ अध्याय शेवडे जी के उपन्यासों के शिल्पवैधानिक विकास के मूल्यांकन के लिए समर्पित है। इसमें उपन्यास के प्रमुख तत्व - कथावस्तु, पात्र - चरित्रचित्रण, कथोपकथन, देश, काल, वातावरण, भाषा-शैली, तथा उद्देश्य का महत्व, उसकी विशेषताएँ आदि की चर्चा करते हुये, उस के परिप्रेक्ष्य में शेवडे जी के उपन्यासों की कथावस्तु, पात्र-चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषाशैली और उद्देश्य के क्रमिक विकास पर प्रकाश डाला गया है।

पंचम अध्याय में हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा में शेवडे जी के योगदान को रेखांकित किया गया है। इसके अन्तर्गत स्वरूपगत, शिल्पगत तथा वैचारिक योगदान का अनुशीलन किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का निखरा और स्पष्ट रुप डॉ.सुनीलकुमार लवटे जी के निर्देशन का प्रमाण है। मैं उनका ऋणी हूँ।

बे.सर्डेकर ग्रंथालय शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर ,मोगावती महाविद्यालय,कुरुक्ली आदि संस्थाओं ने तथा वहाँ के ग्रंथपालों ने सामग्री जुटाने,संदर्भ आदि के संबंध में काफी सहायता की । मैं उनका भी ऋणी हूँ। जिनकी सहायता से मेरा यह संकल्प सिद्ध हुआ उनमें उल्लेखनीय है, प्राचार्य डॉ.बी.बी.पाटील, जी, डॉ.सौ. शशिप्रभा जैन जी, मेरे विभागाध्यक्ष गुरुवर्य प्रा. के.स्व.मणियार जी , प्रा.डॉ. सुधाकर गोकाककरजी, तथा मेरे परिममित्र प्रा.टी.एम. पाटील जी और प्रा. के.डी. पाटील जी। मैं इन सब का कृतज्ञ हूँ। जिनकी प्रेरणा और सहायता से प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध पूर्ण हुआ वे हैं हमारी संस्था के अध्यक्ष श्री. डी.के. खराडे जी और प्राचार्य एस.टी.जाधव जी। इनके ऋण में रहना ही मैं पसंद करुँगा।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध का टंकलेखन श्रीयुत बाळकृष्ण रा.सावंत, ने किया। उनका मैं आभारी हूँ।

प्रा. ईश्वर रामचंद्र मोरे

कुरुक्ली।

अगस्त, १९८८.